डा. गुड्डी कुमारी

(Guest lecturer)

(इतिहास विभाग)

A.N.D. College, Patory(Samastipur)

LECTURE - 3.

B.A.(H) part-I

✓✓ प्रागैतिहासिक काल की विशेषताए (Salient Feature of PRE-HISTORIC AGE)....

@ पाषाण काल (STONE AGE)

मानव की उत्पत्ति एवं आरंभिक समाज का अध्ययन हम प्रागैतिहास के अंतर्गत करते हैं। प्रागैतिहास का शाब्दिक अर्थ (प्राक+इतिहास) इतिहास से पूर्व के युग से है। प्रागैतिहासिक काल ऐतिहासिक युग के पूर्व का वह अंधकारमय काल है जिसमें मानव को लिपि का कोई ज्ञान नहीं था। मानव की उत्पत्ति के पश्चात उन्होंने समूहों में रहना आरंभ किया और आरंभिक समाज का आविर्भाव हुआ। आखेट एवं खाद्य संग्रह इस आरंभिक समाज की आजीविका के प्रमुख साधन बने। अपने इन आजीविका के साधनों की प्राप्ति के लिए मानव ने जिन हथियारों का प्रयोग किया वह मूलत पाषाण थे अथवा पाषाण से निर्मित थे। अतः आरंभिक मानव समाज की संस्कृति को पाषाण कालीन संस्कृति एवं उस युग को पाषाण युग नाम दिया गया।

प्रागैतिहासिक सभ्यता को मानव समाज द्वारा प्रयुक्त सामग्री के आधार पर मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा गया है।-

1. पूर्व पाषाण काल (palaeolithic Age) - 25 लाख से दस हजार वर्ष ई. पूर्व।

2. मध्य पाषाण काल (Mesolithic Age)- 10 हजार से 5000 वर्ष ई. पूर्व.

3. नवपाषाण काल(Neolithic Age) - 7 हजार से 1 हजार वर्ष ई. पूर्व.

1. पूर्व पाषाण काल (palaeolithic Age) - पृथ्वी पर पूर्व पाषाण काल 25 लाख से दस हजार वर्ष ई. पूर्व तक रहा। इस काल की अवधि अत्यधिक लंबी होने के कारण अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से 1870 ई. में लार्टेट महोदय ने इसे तीन भागों में विभाजित किया-

(I) निम्न पुरापाषाण काल(Lower palaeolithic Age) यह काल 25 लाख से 1 लाख वर्ष ई. पूर्व तक रहा।

(II) मध्य पुरापाषाण काल(Middle palaeolithic Age) यह काल 1 लाख से 40 हजार वर्ष ई.पूर्व तक रहा।

(III) उत्तर पुरापाषाण काल (Upper palaeolithic Age) यह काल 35 हजार से 1 हजार वर्ष पूर्व तक रहा।

(I) निम्न पुरापाषाण काल(Lower palaeolithic Age) :-

ऑस्ट्रेलोपीथिकस अफ्रीकांस, जावा मानव(पिथिकेन्ट्रथोपस इरेक्टस), पीकिंग मानव, हिडिल वर्ग मानव आदि को निम्न पूरा पाषाण काल के प्रतिनिधि माना जाता है।

निम्न पुरा पाषाण काल की प्रमुख विशेषता (Main Feature of Lower Palaeolithic Age) -

मानव का चार पैरों से उठ कर दो पैरों पर खड़ा होना निम्न पुरापाषाण काल की सर्वप्रमुख विशेषता सिद्ध हुई। यह एक ऐसी क्रांति थी जिसने मानव को जानवरों की श्रेणी से पृथक कर दिया। मानव अब पेड़ों से उतरकर पृथ्वी पर चलने एवं दौड़ने लगा। हाथ स्वतंत्र होने से उसके सामाजिक जीवन को एक नवीन आयाम मिला। अब मस्तिष्क जो सोचता था, हाथ उस सोच को व्यवहारिक बना देता था।

संभवत रामापीथिकस चारों पैरों पर चलता था एवं पेड़ों पर निवास करता था। ऑस्ट्रेलोपीथिकस ने दो पैरों पर खड़े होने के प्रयास आरंभ किए, संभवत जावा मानव एवं पीकिंग मानव दो पैरों पर खड़े होने लगे थे, इन्हें चचेरे भाई कहा जाता है। अब मानव एक शिल्पी बन गया, किसी भी वस्तु को हाथ से उठाकर अब देख सकता था एवं आवश्यकता अनुसार पत्थरों के उपकरण बनाने लगा।

निम्न पुरापाषाण कालीन संस्कृति (Lower Palaeolithic Culture)

मानव जब पेड़ों से उतरकर पृथ्वी पर चलने लगा तो उसे जमीन पर चलने वाले ताकतवर जानवरों से मुकाबला करना आवश्यक हो गया। जानवरों से मुकाबला करने एवं आखेट करने के लिए मानव ने इस युग में पत्थर के उपकरणों का निर्माण किया। पत्थरों के हथियारों की रचना के आधार पर पुरा पाषाण कालीन संस्कृतियों को विभिन्न नाम दिया गया जो इस प्रकार हैं -

(क) पूर्व चेलियन संस्कृति (pre chellean culture) - इस संस्कृति का काल 100000 से 25000 वर्ष ईसा पूर्व माना जाता है। इस काल में मानव के पाषाण हथियार बेडौल होते थे। कालांतर में आवश्यकता अनुसार मानव ने पत्थर के छिलके अथवा फलक उतारे एवं आंतरिक भाग को एक ओर से नुकीला बनाया। इस हथियार की आकृति बदाम की भांति थी। मानव इसे पकड़ कर नुकीले भाग से जानवरों का शिकार करता था। इस प्रकार इस हथियार को हाथ की कुल्हाड़ी कहा जाता है। इस मानव इतिहास के सर्वप्रथम अस्त्र के निर्माण का श्रेय पूर्व चेलियन संस्कृति के वाहक यूरोपीय मानव को जाता है।

(ख) चेलियन संस्कृति (Chellean culture) - चेलियन संस्कृति 100000 वर्ष ई. पूर्व माना जाता है। इस संस्कृति के मानवों ने मुष्ठी छुरा को दोनों ओर से कुछ और छीलकर बदाम के आकार में कुछ और नुकीला बनाया। इसकी हाथ में पकड़ और अधिक मजबूत की। इस संस्कृति का नाम उतरी फ्रांस के स्थल के नाम पर रखा गया।

(ग) अबाबेली एश्यूली संस्कृति (Abbevillio- Acheulean Culture) - इस संस्कृति का नाम फ्रांस के सेंट एश्यूल एवं अबेविल नामक स्थलों के आधार पर पड़ा। इस संस्कृति की चेलियन संस्कृति के साथ अत्यधिक समानता दृष्टिगोचर होती है। इस संस्कृति का काल 88000 ईसा पूर्व माना गया। इस संस्कृति के हस्त कुठार यूरोप , अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको अफ्रीका, पश्चिम एशिया, भारत और चीन से भी प्राप्त हुए। इस काल में मुष्टी छोरे को और अधिक नुकीला बनाया गया।

(घ) सोहन संस्कृति(Sohan Culture) - एशिया एवं अफ्रीका के भूखंडों में गोल पत्थरों पेबल्स को तोड़कर हथियार बनाए गए। इन्हें चापर-चापिंग हथियार कहा गया। पेबल पत्थर उन टुकड़ों को कहा जाता है जिनके किनारे पानी के बहाव में रगड़ खाकर चिकने एवं सपाट हो जाते हैं। इस संस्कृति के उपकरण सर्वप्रथम पंजाब के सोहन नदी में प्राप्त हुए। अत: इसे सोहन संस्कृति भी कहा गया।

निम्न पुरापाषाण कालीन मानव जीवन (Human Life During Lower Palaeolithic Age):-

निम्न पुरापाषाण कालीन मानव के जीवन से संबंधित पुरातात्विक साक्ष्य अपर्याप्त है। इस काल का मानव खुले आकाश के नीचे नदियों के किनारे रहता था। गुफाओं से उसे कोई मोह नहीं था। कतिपय विद्वानों का मानना है कि 140000 वर्ष पूर्व मानव गुफाओं में रहने लगा था। एश्यूली संस्कृति के प्रमाण पठारी भागों के साथ-साथ गुफाओं से भी मिलते हैं। भारत में मध्य प्रदेश के रायसेन जिले के भीमबेटका स्थल की गुफाओं से एश्यूली संस्कृति का प्रचुर साक्ष्य मिले हैं। हस्त कुठार, विदारक, पापड़ी पत्थर निम्न पुरापाषाण कालीन मानव के प्रमुख हथियार थे। इनका प्रयोग आखेट करने एवं कंदमूल जड़ों को एकत्रित करने में किया जाता होगा। उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर संकेत मिलता है कि एसयूलि संस्कृति के निर्माता हाथी, गाय बैल दरियाई घोड़ा सूअर हिरण आदि पशु का आखेट करते थे। हाथी जैसे जानवरों का शिकार इस बात का घोतक है कि यह शिकार सामूहिक रूप से किया जाता होगा अतः हम विचार कर सकते हैं कि निम्न पुरापाषाण युगीन मानव समूह में रहने लगा होगा।

(II) मध्य पुरापाषाण काल(Middle palaeolithic Age):-

मध्य पुरापाषाण काल की अवधि 100000 से 40000 ई. पूर्व मानी जाती है। इस मध्य पुरापाषाण कालीन संस्कृति का प्रमुख प्रतिनिधि नियण्डरथल मानव था।

✓ मध्य पुरापाषाण काल की सर्वप्रमुख संस्कृति मौस्टीरियन संस्कृति के नाम से जानी जाती है। इस संस्कृति के रचिता नियंडरथल मानव को माना जाता है। इस संस्कृति के लोगों ने नाशपाती के आकार के हस्त कुठार बनाएं। चेलियन एवं ऐसयूली के हस्त कुठारों की तुलना में यह छोटे थे। मध्य पूरा पाषाण काल में मानव विभिन्न प्रकार की खुरचनियों का प्रयोग करने लगा। यह मौस्टीरियन संस्कृति का विशिष्ट हथियार था। इस काल के अन्य पाषाण निर्मित उपकरण छिद्रक, ब्यूरिन एवं तिकोने आकार के शल्क आदि थे। इस काल में मानव ने पशुओं की अस्थियों से नुकीले भाले जैसे हथियार बनाना प्रारंभ किए। स्पेन एवं फ्रांस से ऐसे भाले प्राप्त हुए हैं। मौस्टीरियन संस्कृति के प्रमाण पश्चिम जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी , इटली सहित पश्चिम एशिया से भी मिले हैं। संभवतः मध्य पुरा पाषाण कालीन मानव ने नुकीले पत्थरों को हड्डियों में बांधना प्रारंभ कर दिया था। मुठ एवं हात्थों वाले उपकरण उपयोग में लाए जाने लगे थे।

मध्य पूर्व पाषाण कालीन मानवीय जीवन(Human Life During Middle palaeolithic Age)-

नियंदरथल मानव के शारीरिक संरचना पूर्ण मानव से अत्यधिक साम्य रखती थी। इसकी जांग की हड्डी देखने से पता चलता है कि यह दो पैरों पर सीधा तो चल सकते थे परंतु बिल्कुल तन कर चलने में असमर्थ थे। यह काल अंतिम हीमयुग के अंतर्गत आता है। अत्यधिक सर्दी से बचाव के लिए नियंडरथल मानव ने गुफाओं में रहना प्रारंभ किया। उत्तरी इराक की शनिडर गुफा से एक अपंग व्यक्ति का जीवाश्म मिला। जिससे यह पता चलता है कि ये लोग मिलकर रहते थे वह शिशुओं रोगियों एवं वृद्धों की देखभाल भी करते थे।

✓ आग का प्रयोग(Use of Fire) :- अधिकांश मानवशास्त्रियों का मानना है कि नियंडरथल मानव ने सर्वप्रथम आग का प्रयोग आरंभ किया। चुकि यह भयानक सर्दी का काल था। अतः भालू और गैंडे जैसे बड़े पशु भी ठंड से बचने के लिए गुफाओं में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे थे। इन्हें गुफाओं से दूर रखने में इन मानव को अग्नि से अत्यधिक मदद मिली। वे गुफाओं के द्वार पर अग्नि प्रज्वलित करते थे। आखेट एवं खाद्य संग्रह इनकी आजीविका का प्रमुख साधन था।अग्नि के आविष्कार के बाद अब यह मांस भूनकर खाने लगे।

✓ मृतकों का विसर्जन(Disposal of the Dead Body):- नियंडरथल इतिहास का वह सर्वप्रथम मानव था जिसने मृतकों को दफनाना आरंभ किया। फ्रांस के ला मोस्टीयर एवं ला शैपल से, इराक में शनिडर से शवधान के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। मृतकों को विशेष रूप से खोदी गई समाधि ओं में दफनाया जाता था। मृतक के साथ उसके द्वारा उपयोग किए गए परेशान उपकरणों एवं आखेटित जानवरों को भी दफनाया जाता था। संभवत उन्हें विश्वास था कि मृत्यु उपरांत भी व्यक्ति का अस्तित्व किसी न किसी

रूप में बना रहता है। शनिडर के एक स्थल से पता चलता है कि मृतकों पर पुष्प भी अर्पित किए जाते थे। यदि मृतक व्यक्ति का इतना ध्यान रखा जाता था तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि जीवित व्यक्तियों में पारस्परिक सौहार्द का वातावरण रहा होगा। कई विद्वानों ने नियंडरथल मानव को इतिहास का सर्वप्रथम दार्शनिक मानव माना है।

(III) उच्च पुरापाषाण काल(Upper palaeolithic Age) :-

35000 ई.पूर्व के लगभग नियंदरथल मानव जाति बिल्कुल समाप्त हो गई और उसका स्थान पूर्ण मानव जातियों द्वारा ले लिया गया। यह जातियां एक साथ यूरोप अफ्रीका एवं एशिया के विभिन्न विभागों में दिखाइ दीं। कुछ विद्वान मानते हैं कि इन्होंने नियंदरथल को पराजित कर यूरोप पर अधिकार स्थापित किया और कई शाखाओं में विभाजित हो गए। यूरोप में उच्च पुरापाषाण कालीन मानव की ज्ञात शाखाएं निम्नवत है-

✓ क्रोमैग्नन मानव

✓ ग्रीमाल्डी मानव

✓ कोंब कोपेल मानव

✓ शांसलाद मानव।

उत्तर पुरापाषाण कालीन उक्त मानव ने निम्न संस्कृतियों को जन्म दिया-

✓ ऑरिग्रेशियन संस्कृति :- उत्तर हिम युग में यह क्रोमैग्नन मानव की सर्वप्रथम ज्ञात संस्कृति है। इसका काल 25000 ईसा पूर्व माना जाता है। इस काल में सुई एवं पत्थरों को रगड़ कर चमकाने वाले औजार उपयोग किए जाने लगे। चट्टानों पर साधारण उभरी नग्न स्त्रियों की आकृतियां खोदी गई। अतः कला का आरंभ हुआ। इस संस्कृति का नाम फ्रांस के पायरेनीस जिले के लो ऑर्गेनिक नामक स्थान के नाम पर पड़ा।

✓ सोल्युट्रियन संस्कृति :- इस संस्कृति का नाम पश्चिम यूरोप के सॉल्यूट्स स्थल पर पड़ा। यह लोग अपने स्वच्छ और सुंदर हथियारों के लिए जाने जाते हैं। नुकीले अस्त्र रौंदे एवं छेद करने वाले बरमें भाले आदि प्राप्त होते हैं। हड्डियों की बारिक सुई बनाई गई, बारहसिंगे के सींगो से कुछ उपकरण बनाए गए। यह संस्कृति फ्रांस, स्पेन, चेकोस्लोवाकिया एवं पोलैंड में 20,000 ईसा पूर्व में प्रकट हुई। इनकी कलात्मक अभिरुचि भी अधिक थी।

✓ मैग्डेलियन संस्कृति :- इसका नामकरण फ्रांस के लॉ मेडेलिन नामक स्थल के आधार पर पड़ा। इस संस्कृति में उच्च पुरा पाषाण कालीन कला का चरमोत्कर्ष दृष्टिगोचर होता है। यह संस्कृति यूरोप में 16000 ईसा पूर्व प्रस्फुटित हुई। इस संस्कृति के प्रतिनिधियों ने हाथी दांत, हड्डी और सींग के कई तरह के नाजुक बर्तन बनाये एवं सुई एवं पिनों को विरासत रूप दिया। कला के क्षेत्र में यह संस्कृति अल्टामीरा में प्राप्त चित्रों का युग था जिन्हें क्रो-मैग्नन द्वारा बनाये गए सूक्ष्म एवं पूर्ण कलाकृतियां होने का श्रेय प्राप्त है। कला एवं कलात्मक अभिरुचि का संकेत इनके द्वारा निर्मित गुफा चित्रों एवं शैलाश्रम पर उकेरे चित्रों से मिलता है। यह काल रेनडियर काल के नाम से भी जाना जाता है।

उच्च पुरा पाषाण कालीन मानवीय जीवन (Human Life During Upper Palaeolithic Age) :-

इस काल में मानव ने अपने हथियार बनाने के लिए पाषाण के साथ-साथ हाथी दांत सिंग एवं अस्थियों का प्रयोग आरंभ कर दिया था। नीयंडरथल मानव युगीन जलवायु की तुलना में अब उष्ण जलवायु थी। खुले आकाश के नीचे रहना अब उतना मुश्किल ना रहा। संभवत अब मानव गुफाओं के साथ-साथ झोपड़ी बनाकर भी रहने लगा। उनके द्वारा बनाई गई सुई से ऐसा अनुमान लगाया

जाता है कि उच्च पुरापाषाण कालीन मानव पशुओं की खाल को सील कर वस्त्र का रूप प्रदान करने लगा था परंतु उसकी आजीविका का साधन अभी भी आखेट एवं खादसंग्रह ही था। इस काल में मानव की कलात्मक अभिरुचि विकसित हुई। अस्थियों एवं सिंगो से निर्मित वस्तुओं एवं सिंघो से निर्मित हथियारों को नक्काशी द्वारा सुंदरता प्रदान की। अब मानव ने हाथी दांत एवं मिट्टी की मूर्तियां बनाना भी आरंभ कर दिया। इनके द्वारा निर्मित कुछ नारी मूर्तियों को पुरातत्वशास्त्रियों ने रति व विनस की मूर्तियां कहा है। इन मूर्तियों में सिर छोटे बनाए गए हैं, बालों के स्थान पर कुछ लकीरें खींची है, संभवत मूर्तियां मातृशक्ति के किसी रूप का प्रतीक थीं।

(Mesolithic & Neolithic Age के विशेषताओं के लिए अगले Lecture को देखें।)

!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!